|  |
| --- |
| 24. August |
| **Fest des heiligen Apostels Bartholomäus** |
| Lesung: Offb 21,9b-14; Evangelium: Joh 1,45-51  |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 546, 1-4 | Christus, du Licht vom wahren Licht |
|  | GL 775, 1-3 | König ist der Herr |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 154 | Kyrie |
|  |  |  |
| Gloria: | 168, 1+2 | Gloria. Ehre Gott in der Höhe |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Psalm 145, 10-13b.17-18 |
|  | Kehrvers:  |  |
|  | GL 76, 1 | Der Herr ist nahe |
|  | oder |  |
|  | GL 479, 1-3 | Eine große Stadt ersteht |
|  | GL 349 | Geist der Zuversicht |
|  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 175, 4 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Rabbi, du bist der Sohn Gottes,* |
|  | *du bist der König von Israel.* |
|  |  |  |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 183 | Dir, Vater, Lobpreis werde |
|  | GL 184 | Herr, wir bringen in Brot und Wein |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 196 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 204 | Christe, du Lamm Gottes |
|  |  |  |
| Danksagung:  | GL 380, 1+4 | Großer Gott |
|  | GL 484, 1+4-6 | Dank sei dir, Vater |
|  | GL 489, 1-3 | Lasst uns loben |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 542, 1+4 | Ihr Freunde Gottes |
|  | GL 478, 3+4 | Die Kirche ist erbauet |